सम्बन्धियों के मान-मर्यादा का भी ध्यान नहीं रखते हैं।

संयुक्त तथा एकाकी परिवारों की प्रकृति को विधिवत समझने के लिए आवश्यक है कि उसके संगठन, आकार परिवार का उद्देश्य तथा आपसी सम्बन्धों के आधार पर इनकी भिन्नता को परखा जाये।

संयुक्त परिवार (Joint Family)

1. संयुक्त परिवार में कई पीढ़ी के सदस्य एक साथ, एक आवास में रहते हैं तथा स्वयं को एक संयुक्त इकाई के रूप में मान्यता देते हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था आकार के दृष्टिकोण से एक वृहत् व्यवस्था है।

2. संयुक्त परिवार में सभी प्रकार की आय एक सामान्य कोष में जमा की जाती है। इस प्रकार सम्पत्ति का स्वरूप सम्मिलित होता है। कोई भी सदस्य परिवार की सम्पत्ति में से अपना हिस्सा अलग नहीं कर सकता है।

3. संयुक्त परिवार में एक मुखिया होता है जिसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। उसी की आज्ञा तथा निर्देश का पालन प्रत्येक सदस्य को करना पड़ता है।

4. संयुक्त परिवार पैतृक स्थान पर एक साथ रहते हैं। इस स्थान से धार्मिक तथा भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं। स्थान परिवर्त्तन के प्रति उदासीन रहते हैं। ऐसे परिवार स्थायी प्रकृति के होते हैं। इसके सदस्यों की आजीविका स्थान विशेष में ही रहती है।

5. संयुक्त परिवार में सदस्यों का दायित्व असीमित होता है। प्रत्येक सदस्य सभी सदस्यों की भलाई के लिए सचेष्ट रहते हैं। पारस्परिक कर्त्तव्यों की पूर्ति की कोई सीमा नहीं होती है।

एकाकी परिवार (Nuclear Family)

1. एकाकी परिवार-व्यवस्था आकार के दृष्टिकोण से एक सीमित व्यवस्था है जिसमें पति-पत्नी तथा उनकी अविवाहित सन्तान सम्मिलित होते हैं। ऐसे परिवारों की सदस्य-संख्या चार-पांच से अधिक नहीं होती है।

2. एकाकी परिवार में सम्पत्ति का रूप व्यक्तिगत होता है जिस पर उस व्यक्ति का पूर्ण अधिकार रहता है। व्यक्ति उसे किसी प्रकार व्यय या बचत कर सकता है। कानूनी रूप से भी अपने द्वारा अर्जित सम्पत्ति का उपयोग वह किसी भी प्रकार से कर सकता है।

3. एकाकी परिवार में प्रायः पति-पत्नी का स्थान समानता पर आधारित होता है जिसमें बड़े-बच्चों से भी राय ली जा सकती है।

4. एकाकी परिवारों में स्थानीय गतिशीलता सरल होती है। परिवार छोटा होने के कारण स्थान परिवर्त्तन में कठिनाई नहीं होती है। जहाँ अच्छी नौकरी मिलती है वहीं पूरे परिवार सहित जाया जा सकता है।

5. एकाकी परिवार में सदस्यों की संख्या कम होने के कारण दायित्व भी सीमित होते हैं। बच्चे भी समर्थ तथा विवाहित हो जाने के बाद अपना परिवार अलग बसा लेते हैं माँ-बाप पर उनका बोझ नहीं रहता है।

Scanned with CamScanner

6. संयुक्त परिवार का सदस्य आजीवन उन्हीं सदस्यों से तथा घर से बंधा रहता है। उसी परिवार में जन्म लेता, विवाह के बाद भी उन्हीं के बीच रहकर सन्तान को जन्म देता तथा सभी का पालन-पोषण करता है।

7. संयुक्त परिवार में विभिन्न पीढ़ी तथा विचारों के लोग होते हैं। आपसी विचारों में सामंजस्य नहीं होने के कारण पारस्परिक द्वेष, ईर्ष्या, कलह, तनाव और संघर्ष चरम सीमा पर रहते हैं।

8. संयुक्त परिवार में स्त्रियों की स्थिति निम्न-सम होती है। उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। कर्त्ता या सास-नन्द के आधीन रहना पड़ता है।

9. सामाजिक दायित्व के दृष्टिकोण से संयुक्त परिवार एक निष्क्रिय संस्था है। इन परिवारों में अकर्मण्य व्यक्तियों की बहुलता हो जाती है क्योंकि उनकी सभी आवश्यकतायें पूरी होती रहती हैं अत: अधिकांश सदस्य श्रम के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

10. ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत संयुक्त परिवार अत्यधिक प्राचीन संस्था मानी जाती है।

6. एकाकी परिवार का सदस्य भी उसी घर तथा सदस्यों से बँधा नहीं रहता है। वह परिवर्तनशील है। प्राय: जन्म लेने और जन्म देने का परिवार तथा स्थान एक-दूसरे से भिन्न होता है।

7. छोटे आकार का परिवार होने के कारण सभी पारस्परिक स्नेह, सद्भाव से बँधे रहते हैं। अपने विचारों और अनुभवों के द्वारा एक-दूसरे की सहायता करते हैं। आपसी गलतफहमी आसानी से समाप्त हो जाती हैं।

8. एकाकी परिवार में स्त्री का स्थान एक मित्र, सहयोगिनी के रूप में होता है।

9. एकाकी परिवार अधिक कर्मण्य रहता है। माता-पिता बच्चों के पालन-पोषण के प्रति अधिक सचेत रहते हैं। अधिक-से-अधिक परिश्रम द्वारा परिवार की आवश्यकतायें पूरी करते हैं। बच्चे भी माँ-बाप की क्रियाशीलता को देखते हुए स्वयं भी परिश्रमी बन जाते हैं।

10. एकाकी परिवार उद्योगीकरण तथा नागरीकरण और फैशन की देन है।

Scanned with CamScanner